Shri Yamunashtakam
By Roop Goswami

अपने भाई यम की पुरी की प्राप्ति (नरक) का निवारण करने वाली, अपने दर्शन (प्रेक्षा) से अत्यन्त घोर पापियों को भी पाप समुद्र से पार कर देने वाली[3], अपने जल की अतिशय मधुरता से सर्वजनों के चित्त को बाँध लेने अर्थात् आकर्षित करने वाली कमल के बन्धु सूर्य की पुत्री यमुना मुझको सदा पवित्र करें।

अपनी मनोहारिणी जल-धारा से विशाल खाण्डव वन को सुशोभित करने वाली, कमल-समूह पर उठते (उड़ते) हुए पक्षियों और भ्रमरों के ताण्डव (संकुलता) युक्त शोभा वाली, स्नान की कामना करने वाले पापियों के उत्कट पापों की सम्पदा को अन्ध (विनष्ट) कर देने वाली कमलबन्धु सूर्य की पुत्री यमुना मुझको सदा पावन करें।

अपने जल बिन्दुओं से स्पर्श (मात्र) हुए जीवों के पूर्व जन्म-कृत दुष्कर्मों के दुष्परिणामों को नष्ट करने वाली, नन्दनन्दन श्रीकृष्ण की अन्तरङ्ग (परमरागानुगा) भक्ति की धारा को तीव्र करने वाली अपने तट का सेवन करने की इच्छा करने वाले प्राणियों का कल्याण करने वाली कमलबन्धु सूर्य की पुत्री यमुना मुझको सदा पवित्र करे।

अनेक द्वीपों के समह से युक्त, सात समुद्रों को भेदकर पार जाने वाली, श्रीमुकुन्द (कृष्ण) के द्वारा की गयी अति प्रशस्त एवं दिव्य लीलाओं को जानने वाली, अपनी आभा की किरणों से इन्द्र नीलमणि के समूह की आभा को निन्दित करने वाली अर्थात् तुच्छ बना देने वाली, कमलबन्धु सूर्य की पुत्री यमुना मुझे सदा पवित्र करें।

Shri Yamunashtakam
By Roop Goswami

जो सुन्दर मथुरा मण्डल से चतुर्दिक सुशोभित हैं, जो वैष्णवों के प्रेममय (भक्ति) मार्ग का वर्धन (पोषण) करने में प्रवीण है (तथा) अपनी तरङ्ग रूप भुजाओं के विलास (संचालन) द्वारा पद्मनाभ विष्णु (श्रीकृष्ण) के चरणों की वन्दना करने वाली है,[3] वह कमलबन्धु सूर्य की पुत्री यमुना मुझे सदा पवित्र करें।

जो अपने रमणीक तट पर रम्भाती गौओं के समूह से सुशोभित है, जो दिव्य गन्ध से पूर्ण कदम्ब वृक्षों के पुष्पों से आच्छादित है, जो नन्दनन्दन (श्रीकृष्ण) के भक्त वृन्द के सम्मिलन का अभिनन्दन करने वाली है, वह कमलबन्धु सूर्य की पुत्री यमुना मुझे सदा पवित्र करें।

हर्ष से फूले हुए पंखों और मल्ली[2] की पंखुरी सी नुकीले नेत्रों वाले लाखों लाख हंसों के कलरव वाली, भक्ति से बिंधे हुए (भगवत्प्रेम की पराकाष्ठा को प्राप्त) देवता, सिद्ध, किन्नर आदि से पूजित, अपने तट पर प्रवाहित पवन की सुगन्ध से जन्म मरण के बन्धन को काट देने वाली सूर्य की पुत्री यमुना मुझे पवित्र करें।

(प्रभु) की चिन्मयी (ब्रह्मानन्दमयी) लीला से पूर्ण अपनी जल धारा से भूलोक, (पृथ्वीमण्डल) भुवर्लोक (अन्तरिक्ष) तथा स्वर्लोक (स्वर्ग) को व्याप्त करने वाली, नाम स्मरण और स्तुति मात्र से अहंकार और उत्कट पापों के मर्म (भूल) को भस्मसात करने वाली, व्रजराजनन्द कुमार के श्रीअङ्ग से भरे हुए सुगन्धित द्रव्य से सुवासित अंग वाली सूर्यपुत्री यमुना मुझे सदा पवित्र करें।

Shri Yamunashtakam
By Roop Goswami

हे सूर्य पुत्री ! हे देवि ! हे कमल लोचने, हे सर्वपापमोचने यमुने ! सन्तोषमयी बुद्धि वाला जो व्यक्ति इस अष्टक द्वारा निर्मल लहरों से चंचल (चेष्टित), समस्त देवताओं से परिवृत आपकी स्तुति करे उसके भक्ति प्रवाह को आप कमललोचन, पापमोचन श्रीकृष्ण की ओर बढ़ाती रहें। (यही मेरी प्रार्थना है)।

।। इति श्रीमद्रूप गोस्वामिना विरचितं यमुनाष्टकं सम्पूर्णम्।।